ISSN 0973-2616
सी एस आई आर समाचार
वर्ष 23 अंक 11 नवम्बर 2006
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन

टाइम पत्रिका में टीकेडीएल

मार्को पोलो के पदचिह्नों पर आज पूर्व कैसे पश्चिम से मिला

टाइम विश्व की एक सर्वाधिक प्रतिष्ठित समाचार पत्रिका, पिछले दशक से भारत और चीन के पुनरूत्थान को विस्तृत कवरेज दे रही है। तीव्र गति से प्रगति करते हुए दोनों एशियाई शक्तियों ने आज विश्व के शीर्ष दस आर्थिकियों में अपना स्थान बना लिया है तथा टाइम ने उनकी असाधारण प्रगति को अपने कई लेखों यथा **इट्स ए होल न्यू वर्ल्ड; कैचिंग मार्किट वेव्स; स्ट्रैन्थ इन नम्बर्स; पीपल थिन्क इंडिया इज ए पूअर कन्ट्रीः इट इज नॉट; ए प्लेस इन द सन; बैंगलोर गोज ग्लोबल, सुपरपावर राइजिंग** तथा **दी इम्पैक्ट ऑफ एशियाज जाइन्ट्स** इत्यादि द्वारा प्रदर्शित किया है।

अब **टाइम एशिया** तथा **टाइम यूरोप** ने अपने 7-14 अगस्त 2006 के विशेषांक प्रकाशित किये हैं, जिसमें मार्को पोलो के पदचिह्नों पर आज पूर्व कैसे पश्चिम से मिला पर दृष्टि डालते हुए आर्थिकियों के वैश्वीकरण तथा इससे अधिक महत्वपूर्ण, उन विभिन्न देशों/क्षेत्रों का उदय/ह्रास जहां पर आज से 700 वर्ष पूर्व माको पोलो ने दौरा किया था, का वर्णन है। टाइम में की गयी कवरेज में चीन के तीव्रगति से बढ़ते व्यापार तथा शक्ति, मंगोलिया में खनिज अन्वेषण; उजबेकिस्तान में ऐतिहासिक **सिल्क रोड** शहर बुखारा तथा समरकन्द; समृद्ध सिंगापुर तथा कानूनहीन मलक्का स्ट्रेट, संघर्षशील श्रीलंका, अपने पुराने गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए जंजीबर का सपना तथा इस्तानबुल, जहां पूर्व और पश्चिम में कोई अन्तर नहीं है, आदि सम्मिलित हैं।

भारत के सन्दर्भ में **टाइम** ने देश द्वारा अपनी समृद्ध औषधीय पद्धति, आयुर्वेद, जो मार्को पोलो की समयावधि के दौरान फल-फूल रही थी, को पुनर्जीवित करने तथा सुरक्षा के प्रयासों को प्रदर्शित किया है। वर्णित प्रयासों में विश्व प्रसिद्ध **पारम्परिक ज्ञान डिजीटल पुस्तकालय (टीकेडीएल)** जिसकी **राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), नई दिल्ली** द्वारा संकल्पना तथा स्थापना की गयी है तथा **आर्य वैद्यशाला (एवीएस) कोट्टाक्कल, केरल** द्वारा सगंध तथा औषधीय पादपों का रोपण तथा अनुसंधान और विकास के बारे में वर्णन हैं।

मार्को पोलो के पदचिह्नों पर आज पूर्व कैसे पश्चिम से मिला

वर्ष 1271 में इससे पूर्व 24 वर्ष की साहसिक यात्रा में मार्को पोलो ने काकेशस, पर्सिया, अफगानिस्तान पामिर होते हुए चीन के लिए सिल्क रूट लिया। वह 17 वर्षों के लिए कुबलाई खान के राजमहल में रुका तथा दक्षिण चीनी मलाक्का समुद्री मार्ग भारतीय सागर होते हुए अन्त में वर्ष 1296 में हार्मज में रूकते हुए वेनिस पहुंचा। दो वर्ष के बाद उसने पूर्व के अपने संस्मरणों को रिकार्ड करने के लिए **डिस्क्रिप्शन ऑफ दी वर्ल्ड** की संकल्पना की जो बाद में **ट्रैवल्स ऑफ मार्को पोलो** कहलाई। साहसी वेनेटियन द्वारा पूर्व के ऐसे रहस्योघाटन जिसमें एशिया को इतना समृद्ध तथा सांस्कृतिक रूप में अग्रणी दिखाया गया था कि यह पश्चिम में एक परी कथा जैसा दिखता था। आने वाली शताब्दियों ने आक्रमण, राजवंशों में परिवर्तन साम्राज्यवाद को देखाजिसने पेंडुलम को पश्चिम के पक्ष में घुमा दिया। परन्तु पूर्व और पश्चिम एक दूसरे को पुनः खोज रहे हैं जैसा कि बहुत से एशियाई देश एक बार पुनः आगे बढ़ रहे हैं। पोलो द्वारा भ्रमण किये गये स्थान अब कैसे हैं तथा पूर्व और पश्चिम आज एक-दूसरे को कैसे देख रहे हैं? **टाइम** के विशेषांक में प्रकाशित लेखों में से कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

भारतः वर्तमान विश्व की दस शीर्षस्थ आर्थिकियों में से एक, भारत, पारम्परिक ज्ञान डिजीटल पुस्तकालय (टीकेडीएल) की स्थापना तथा सगंध तथा औषधीय पौधों के रोपण तथा उनके अनुसंधान एवं विकास के द्वारा पुरातन सुसमृद्ध औषधीय पद्धति, आयुर्वेद को पुनर्जीवित करने तथा उसकी सुरक्षा के लिए प्रयत्न कर रहा है। **चीनः** आज चीन एशिया की प्रमुख आर्थिकियों में से एक है। पश्चिम चीन में ज़िंगजियेंग जैसे स्थान जहां से पोलो गुजरा था, आज उद्योग तथा व्यापार के प्रमुख केन्द्रों में बदलते जा रहे हैं। चीन सिल्क के शीर्ष उत्पादकों में अपना स्थान बनाए हुये है परन्तु मात्रा और गुणवत्ता में आज इटली आगे है। **इस्तान्बुलः** यहां पूर्व और पश्चिम परस्पर विशिष्ट नहीं हैं।**मलक्का स्ट्रेटः** विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण समुद्र के किनारे पर स्थित सिंगापुर प्रभावशाली रूप से वर्षभर 20 मिलियन कन्टेनर जोकि ऐसे 200 समुद्री जहाजों पर लदे होते है जो 123 देशों के 600 बन्दरगाहों पर कार्यरत हैं। सिंगापुर आज वही है जो कभी मलक्का हुआ करता था।**मंगोलियाः** पृथ्वी के कभी सर्वाधिक समृद्ध मंगोलों पर कुबलई खान की मृत्यु के 80 वर्षों के भीतर ही मिंग द्वारा कब्जा कर लिया गया। तब से अपने पड़ोसियों की दयालुता पर रहते हुए मंगोलिया आज वेंकुवर में स्थापित इवानहो माइन्स जैसी पश्चिमी कम्पनियों की सहायता से अपनी खनिज सम्पदा के दोहन के द्वारा एक बार पुनः समृद्ध होने का प्रयत्न कर रहा है। **श्रीलंकाः** कभी समृद्ध राष्ट्र परन्तु अब संघर्षशील राष्ट्र है। **जंजीवरः** कभी अफ्रीका के सिंगापुर के रूप में प्रसिद्ध जंजीबर अपने पुराने वैभव को पुनः प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।

कृषि शक्ति, एक 10 हार्सपावर का ट्रैक्टर राष्ट्र को समर्पित

एक औसत भारतीय कृषक के लिए 20 हार्सपावर तथा उससे अधिक की शक्ति के मानक ट्रैक्टरों, जो उत्पादकता तथा प्रति इकाई पैदावार के बारे में बताते है, का प्रयोग यंत्रीकृत कृषि के लिए करना कठिन है। छोटे, सुसम्बद्ध तथा आसानी से शीघ्र चालनीय तथा लगभग 10 हार्सपावर या उससे कम श्रेणी के ट्रैक्टर, जो छोटे तथा खंडित भूमि के टुकड़ों के लिए उचित हों, का विकास करने की मांग जोरों पर थी।

इस आवश्यकता के प्रत्युत्तर में केन्द्रीय यांत्रिक अभियान्त्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमईआरआई), दुर्गापुर ने 10 हार्सपावर के छोटे ट्रैक्टर का विकास, कृषि यंत्रीकरण का समर्थन करने तथा पैदावार को बढ़ाने के लिये, करने का बीड़ा उठाया। सीएमईआरआई ने उस समय राष्ट्र का गौरव बढ़ाया, जब वर्ष 1970 में इसने देश के पहले स्वदेशी ट्रैक्टर 20 हार्सपावर के **स्वराज ट्रैक्टर** का अभिकल्पन तथा विकास किया। इसके पश्चात सीएमसीआरआई ने 35 हार्सपावर के **सोनालिका ट्रैक्टर** का अभिकल्पन किया जिसकी अत्यधिक उत्पादकता है।

सीएमसीआरआई द्वारा आरंभ की गयी इस परियोजना का लक्ष्य छोटे ट्रैक्टर (10-12एचपी) तथा मार्किट में उपलब्ध डीजल इंजन तथा ट्रैक्टर के पुर्जों पर आधारित मिलते-जुलते औजारों का विकास करना था। यह निर्णय लिया गया कि प्रथम मॉडल को एक रोटेवेटर अथवा खेती करने के औजार को इसके समरूप औजारों के रूप को ध्यान में रखकर सीएमईआरआई में अभिकल्पित, निर्मित तथा परीक्षित किया जाएगा।

डॉ. आर.ए. माशेलकर, महानिदेशक, सीएसआईआर तथा सचिव, डीएसआईआर ने अभी हाल ही में संरचना अभियान्त्रिकी अनुसंधान केन्द्र, चैन्नई में आयोजित ऑटोमोबाइल उद्योग सभा में 10 हार्सपावर के ट्रैक्टर मॉडल को राष्ट्र को समर्पित किया। डॉ. माशेलकर ने यथोचित रूप में ट्रैक्टर का नामकरण **कृषि शक्ति** किया जोकि उनके अनुसार भारतीय किसानों को सशक्त बनाने में सीएसआईआर के प्रयासों का एक प्रतिबिम्ब है। उन्होंने आगे कहा कि राष्ट्र की आर्थिक विकास दर को सतत बनाए रखने के लिए किसानों का सशक्तिकरण एक अनिवार्य कदम है। समुचित उत्पादन आरम्भ होने पर यह विश्व में सर्वाधिक कम मूल्य का ट्रैक्टर होगा। ट्रैक्टर की प्रति इकाई निर्माण की अनुमानित लागत एक लाख रुपये होगी। यह माना जा रहा है कि एक बार व्यावसायीकरण हो जाने पर यह ट्रैक्टर ग्रामीण भारत में क्रान्ति ला देगा।

10 हार्सपावर ट्रैक्टर कृषि शक्ति की प्रौद्योगिकी मैसर्स पुज्जोलाना ट्रैक्टर्स लिमिटेड को हस्तान्तरित की गयी

केन्द्रीय यांत्रिक अभियान्त्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएमईआरआई), दुर्गापुर ने हैदराबाद के मैसर्स पुज्जोलाना ट्रैक्टर्स के साथ अपने नवीन विकसित 10 हार्सपावर के ट्रैक्टर कृषि शक्ति की प्रौद्योगिकी हस्तान्तरित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। सीएमईआरआई में 5 सितम्बर 2006 को आयोजित एक अनौपचारिक समारोह में मैसर्स पुज्जोलाना ट्रैक्टर्स लिमिटेड के प्रमुख तकनीकी सलाहकार, श्री भास्कर राव ने डॉ. गोपाल पी. सिन्हा, निदेशक सीएमईआरआई को रु. 5 लाख की आरम्भिक राशि का चैक प्रदान किया जिन्होंने श्री राव को प्रौद्योगिकी प्रलेख तथा ड्राइंग सौंपी।

इस अवसर पर अपने संक्षिप्त भाषण में डॉ. सिन्हा ने इस अवसर को एक छोटे कम कीमत तथा कुशल ट्रैक्टर जिसे देशभर के लाखों किसानों द्वारा खरीदा जा सकता है, के कार्यान्वयन की दिशा में प्रथम चरण की उपमा दी। उन्होंने एक लाख से भी कम कीमत के **लोगों के ट्रैक्टर** के अभिकल्पन तथा निर्माण के लिए इच्छा व्यक्त की तथा आशा की कि इस सपने को पूरा करने में नये प्रौद्योगिकी भागीदार अपने सहयोग को बढ़ाएंगे। श्री

कृषि शक्ति ट्रैक्टर का प्रोटोटाइप

कृषि शक्ति ट्रैक्टर का विकासक दल

डॉ. गोपाल पी. सिन्हा, निदेशक, सीएमईआरआई श्री भास्कर राव, मुख्य तकनीकी सलाहकार, मैसर्स पुज्जोलाना ट्रैक्टर्स लिमिटेड को प्रौद्योगिकी प्रलेख देते हुए।

राव ने ऐसे उद्यम में अपनी फर्म की ओर से सभी प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। सीएमआरआई पुज्जोलाना से तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने के लिए 15 लाख रुपये तथा अगले पांच वर्षों के लिए रु. 750 प्रति ट्रैक्टर की दर से रॉयल्टी भी प्राप्त करेगा।

यहां यह कहना उचित है कि भारत में देशभर में उपलब्ध 36 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि में लगभग 85 प्रतिशत घरेलू कृषि होती है। एक छोटे भारतीय किसान की औसत भूमि सामान्यतः 4 हैक्टेयर से अधिक नहीं होती। आगे भूधारण नीति में लाए गये परिवर्तनों के चलते 10 हैक्टेयर से कम माप की भूमि लघु धारण के अन्तर्गत आती है।

अतः औसत भारतीय किसान के लिए 20 हार्सपावर या उससे अधिक शक्ति की क्षमता वाले ट्रैक्टरों का उपयोग यान्त्रिक कृषि में करना कठिन है जो उत्पादकता तथा प्रति इकाई उपज के विषय में बताती है। अतः छोटे, कॉम्पेक्ट व आसानी से शीघ्र चलनीय 10 हार्सपावर या उससे कम दर के ट्रैक्टरों, जो छोटी तथा बंटी हुई भूमि में भी उपयुक्त सिद्ध हो, के विकास की व्यापक मांग की। इस आवश्यकता के प्रत्युत्तर में ही सीएमईआरआई ने उपज को बढ़ाने तथा यांत्रिक कृषि की समर्थता के लिए छोटे 10 हार्सपावर के ट्रैक्टर के विकास का बीड़ा उठाया।

सीएमईआरआई ने वर्ष 1970 में भी राष्ट्र के गौरव को उस समय बढ़ाया जब पहली बार इसने देश के प्रथम स्वदेशी 20 हार्सपावर के ट्रैक्टर **स्वराज** का अभिकल्पन तथा विकास किया। उसके पश्चात, सीएमईआरआई ने 35 हार्सपावर के ट्रैक्टर **सोनालिका** का अभिकल्पन किया जिसका प्रयोग अधिक उत्पादन में किया गया। एक 15 हार्सपावर का मध्यम दर्जे के ट्रैक्टर का अभिकल्पन भी सीएमईआरआई द्वारा किया गया।

सीएमईआरआई में कार्यान्वित की जा रही परियोजनाओं का लक्ष्य बाजार में उपलब्ध ट्रैक्टरों के पुर्जों तथा डीजल ईंजन, पर आधारित छोटे ट्रैक्टरों (10 हार्सपावर) का विकास करना है।ट ाह निर्णय लिया गया कि सीएमईआरआई का प्रथम मॉडल का रोटेबोटर तथा कल्टीवेटर युक्त प्रोटोटाइप बनाकर उसका अभिकल्पन, निर्माण तथा परीक्षण किया जाएगा।

केन्द्रीय नमक तथा समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान द्वारा पोटाश के उत्पादन के लिये विकसित प्रौद्योगिकी का आर्कीन कैमिकल्स इन्डस्ट्रीज़ के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर समझौता

केन्द्रीय नमक तथा समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान द्वारा 21 जुलाई 2006 को कच्छ के जखाउ सॉल्ट वर्क्स मैसर्स आर्कीन कैमिकल्स के साथ सल्फेट ऑफ पोटाश (सोप) उर्वरक, औद्योगिक स्तर का मैग्नीशिया तथा पर्यावरण अनुकूल ब्रोमीनेटींग एजेन्ट के लिये प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर समझौता किया गया। अति उच्च गुणवत्तायुक्त नमक उत्पादन के लिये भारत में प्रसिद्ध जखाऊ सॉल्ट वर्क्स अब इन उत्पादनों का कच्छ के छोटे रण में निर्माण करने के लिये इच्छुक है, जहां प्राकृतिक सॉल्ट बिटर्न प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

सीएसएमसीआरआई, भावनगर के निदेशक डॉ. पुष्पितो घोष तथा आर्कीन इन्डस्ट्री, चैन्नई के चीफ मैनेजिंग डायरेक्टर श्री पी बी आनन्दम समझौता ज्ञापन का आदान प्रदान करते हुए

हाल में, भारत में लगभग हर वर्ष में 3 मिलियन टन म्युरेट ऑफ पोटाश (मोप) उर्वरक आयात किया जाता है। सोप उर्वरक इस मोप से बेहतर है और इसे सीएसएमसीआरआई की प्रौद्योगिकी द्वारा स्पर्धात्मक कीमत पर उत्पादित किया जायेगा। इससे 95 प्रतिशत से भी शुद्ध मैग्नीशिया का उत्पादन किया जायेगा जिसमें बोरोन कम होगा। सेन्ट्रल ग्लास एंड सिरेमिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट कोलकाता (सीजीसीआरआई) ने इस संस्थान द्वारा उत्पादित मैग्नीशिया का परीक्षण किया तथा इसे औद्योगिक उपयोग के लिये सर्वथा उचित पाया। संस्थान ने 99 प्रतिशत शुद्धतावाला मैग्नीशिया बनाने की प्रक्रिया भी विकसित की है, जो मैग्नीशियम धातु उत्पादन तथा अन्य विविध उत्पादनों में उपयोगी होगा। पर्यावरण अनुकूल ब्रोमीनेटिंग एजेन्ट प्रवाही से कई ब्रोमीन युक्त संयोजन बन पायेंगे जिसके लिए प्रवाही ब्रोमीन की जरूरत नहीं रहेंगी।

उक्त प्रक्रियाओं के लिए छह यूएस पेटेन्ट स्वीकृत की गई हैं तथा संबंधित पीसीटी तथा भारतीय पेटेन्ट एप्लीकेशन भी फाइल की गई हैं। तदुपरांत उन्नत मैग्नीशिया प्रक्रियाओं पर दो पेटेन्ट एप्लीकेशन फाइल की गई हैं।

उक्त समझौते द्वारा, सीएसएमसीआरआई ने इस प्रौद्योगिकी के लिए लाइसेंस शुल्क के रूप में 1.09 करोड़ प्राप्त किये हैं तथा उत्पादन अनुसार वार्षिक रॉयल्टी भी संस्थान प्राप्त करेगा। संस्थान यह प्रौद्योगिकी दूसरी पार्टियों को भी दे सकता है।

इस पार्टी द्वारा सीएसएमसीआरआई की प्रक्रिया के आधार पर विस्तृत अभियांत्रिकी कार्य के लिये विस्तृत समुद्री रसायनों के क्षेत्र में अनुभवी नमक लेक सीटी यूएसए के परामर्शदाता को नियुक्त किया जायेगा।

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की में मोजाम्बिक के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री माननीय प्रो. डॉ. इंजीनियर वेनेंसियो मासिंगु का दौरा

विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नई दिल्ली में 20 मई, 2003 को भारत सरकार तथा मोजाम्बिक सरकार के बीच सहयोग के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों देशों में सहयोग का समन्वयन भारत की ओर से विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार तथा मोजाम्बिक की ओर से मोजाम्बिक के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय, मोजाम्बिक सरकार द्वारा किया जा रहा है।

कार्यक्रम के सहयोग के अंतर्गत डॉ. पी.वी. इंडायरसन, पूर्व निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चैन्नई के नेतृत्व में तीन सदस्यीय विशेषज्ञ दल, जिसमें श्री नरेन्द्र शंगारी, वैज्ञानिक-जी, केन्द्रीय भवन अनुसंस्थान संस्थान तथा डॉ. उषा शर्मा, सलाहकार, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग सम्मिलित थीं, ने भारत तथा मोजाम्बिक के बीच विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में पारस्परिक सहयोग के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए मोजाम्बिक का दौरा किया। भारतीय दल ने मोजाम्बिक के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री प्रो. डॉ. इं वेनेंसियो मासिंगु तथा मोजाम्बिक के विभिन्न संगठनों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विस्तृत विचार-विनिमय किया। मोजाम्बिक की ओर से कृषि, खाद्य प्रौद्योगिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एवं इलेक्ट्रॉनिकी, सस्ती-भवन निर्माण सामग्रियां तथा आवास के क्षेत्र में रुचि दिखाई गई। उन्होंने अपने कार्यक्रम में लागत-प्रभावी निर्माण सामग्री तथा स्थानीय सामग्री व श्रम के उपयोग से सस्ते आवासों के निर्माण के क्षेत्र में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की खोज करने के लिए केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की को सम्मिलित करने की इच्छा व्यक्त की। मोजाम्बिक में भूकम्प संभावित क्षेत्र होने तथा लम्बी समुद्री सीमा के कारण बार-बार चक्रवात आते हैं; इसके लिए प्राकृतिक आपदाओं से उनके भवनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समुचित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी खोजों की अपेक्षा की गई।

प्रो. के. गणेश बाबू, निदेशक, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान माननीय प्रो. वेनेंसियो, मासिंगु को प्राकृतिक फाइबर सम्मिश्र दरवाजे कपाट को प्रदर्शित करते हुए

केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की में मोजाम्बिक प्रतिनिधि मंडल का दौरा

माननीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी एवं समुद्री विकास मंत्री भारत सरकार के आमंत्रण पर मोजाम्बिक के सात सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने माननीय श्री कार्लो अगोस्टिन्हो डो रोजारियो, भारत में मोजाम्बिक के उच्चायुक्त के नेतृत्व में 25 जुलाई, 2006 को केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूड़की का दौरा किया।

- माननीय प्रो. डॉ. इंजीनियर वेनेंसियो मासिंगु, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्री मोजाम्बिक।
- डॉ. एंटोनियो जोस लियो, अनुसंधान, नवीन तथा विकास प्रौद्योगिकी निदेशालय (डीआईआईडीटी)
- डॉ. वास्को लिनो, निवेश, नवीन तथा विकास प्रौद्योगिकियों के उपनिदेशक (डीआईआईडीटी)
- डॉ. कालिस्टो बियास, निदेशक, एग्रोनोमिक अनुसंधान संस्थान (आईआईएएम)
- डॉ. फिलिमोने तसाम्बे, मिनिस्टर कांउसलर, नियोजन, सांख्यिकी तथा सहयोग निदेशालय (डीवीईसी)

माननीय प्रो. वेनेंसियो, मासिंगु माउल्डिंग तालिका पर मृदा छत्त टाइल के आकार में रूचि दिखाते हुए

◆ डॉ. प्रिंसीप लिनो, उत्तरी सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रतिनिधि (एमआईसीटीआई)

प्रतिनिधि मंडल की रूचि के अनुसार निम्नलिखित प्रयोगशालाओं को दौरे में सम्मिलित किया गया था।

- भवन संयंत्र तथा प्रक्रम प्रयोगशाला
- अग्नि अनुसंधान प्रयोगशाला
- ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क
- भारी संरचनात्मक परीक्षण प्रयोगशाला
- पर्यावरण विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला
- मृदा ईंटें तथा टाइल प्रयोगशाला।

प्रतिनिधि मंडल को संस्थान द्वारा विकसित लागत प्रभावी भवन-निर्माण सामग्री तथा प्रौद्योगिकियां भी दिखाई गई। जो निम्न प्रकार हैं –

◆ हैंड-माउल्डिंग टेबल के उपयोग से मृदा ईंटों तथा टाइलों का उत्पादन।

◆ सीबीआरआई द्वारा विकसित सिंगल मोल्ड और कंपित्र संघनन द्वारा एग लेइंग मशीन के उपयोग से ठोस तथा खोखले कंक्रीट पिंडों का उत्पादन।

◆ सी-ब्रिक का उत्पादन।

◆ काली कपासी मिट्टी के अंडर रीम्ड पाइल।

कमजोर मिट्टियों के लिए नींव।

◆ प्राकृतिक रेशे के उपयोग से पॉलिमेरिक बोर्ड।

◆ अग्नि रोधी सामग्री तथा भवन घटकों की अग्नि रेटिंग का मूल्यांकन।

◆ कुर्सी सुरक्षा, अपक्षय कारी गारे तथा अग्नि अवरोधक पलस्तर।

◆ ढलवा छतों के लिए कील द्वारा जोड़ी गई लकड़ी कैंची।

◆ तटीय क्षेत्रों के लिए चक्रवात अवरोधी आवास।

◆ ग्रामीण स्वच्छता तथा अपशिष्ट जल निकास पद्धति।

◆ छतों तथा दीवारों के लिए पूर्व निर्मित भवन घटक।

◆ कम ऊंचाई वाले भूकम्प अवरोधी घरों का निर्माण।

◆ हस्ती प्रक्रिया तथा अर्धयंत्रीकृत उत्पादन संयंत्र के उपयोग से उन्नत मृदा ईंटों का उत्पादन।

◆ उच्च दक्षता वाले उच्च कर्षण ईंट भट्ठे के उपयोग से मृदा ईंटों का दहन।

◆ उच्च दक्षता वाले उर्ध्वाधर शाफ्ट चूना भट्ठा तथा प्रदूषण कटौती युक्तियों के उपयोग से चूने का उत्पादन।

◆ विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं में सीबीआरआई प्रौद्योगिकियों का कार्यान्वयन।

प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों को देशभर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में लागत-प्रभावी आवास में सीबीआरआई की प्रौद्योगिकियों के प्रचार-प्रसार एवं अनुप्रयोग को प्रदर्शिनियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा स्थल निदर्शनों के फोटोग्राफ भी दिखाए गए। अतिथिगणों ने सीबीआरआई के महत्वपूर्ण योगदान की तथा इन प्रौद्योगिकियों को अपने देश के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया।

सीबीआरआई के निदेशक की अध्यक्षता में विभागाध्यक्षों की समापन विचार-विनिमय बैठक आयोजित की गई। मंत्री महोदय ने सीबीआरआई में दौरे पर खुशी व्यक्त की तथा सीबीआरआई की लागत प्रभावी आवास प्रौद्योगिकियों को प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने मोजाम्बिक सरकार की विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी नीति का उल्लेख किया जो गरीबी उन्मूलन केन्द्रित है। दौरे पर आए प्रतिनिधि मंडल ने महसूस किया कि सस्ते आवास मोजाम्बिक के लिए लाभप्रद हो सकते हैं।

मंत्री महोदय ने आवास प्रौद्योगिकी से संबंधित सभी सुविधाएं मोजाम्बिक में उपलब्ध कराने हेतु पूर्ण सहायता एवं सहयोग लेने की इच्छा व्यक्त की। इन उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्थानीय निर्माण सामग्रियों, लोगों की आवास जरूरतों के मूल्यांकन तथा संबंधित प्रौद्योगिकियों के उपयोग में सुधार/उन्नयन के अध्ययन हेतु यथाशीघ्र सीएसआइआर के कार्यकारी दल को मोजाम्बिक भेजने की इच्छा जतायी।

निस्केयर में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

संस्थान में दिनांक 26.09.2006 को सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. वी.एस. रामामूर्ति, अध्यक्ष, भर्ती एवं मूल्यांकन बोर्ड तथा पूर्व सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था।

स्थापना दिवस आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री तरुण बनर्जी ने स्वागत भाषण दिया तथा मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया।

इसके पश्चात श्री वी.के. गुप्ता, निदेशक, निस्केयर ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह गर्व का विषय है कि संस्थान ने पिछले वर्ष बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया है तथा संस्थान आने वाले वर्षों में और नयी बुलंदियों को छुएगा।

आमंत्रित अतिथि प्रोफेसर वी.एस. रामामूर्ति ने संचार की चुनौतियां विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि निस्केयर रसायन या जीवविज्ञान इत्यादि में कार्य नहीं कर रहा है बल्कि यह उनका प्रचार प्रसार कर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

श्री एस.के. रस्तोगी, वैज्ञानिक-एफ ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। समारोह का समापन रंगारंग कार्यक्रम के साथ हुआ जिसमें निस्केयर स्टाफ के परिजनों ने भी भाग लिया। संस्थान में अपनी सेवा के 25 वर्ष पूरा करने वाले कार्मिकों को तथा गत वर्ष के दौरान सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों को स्मृतिचिह्न प्रदान किये गये। इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किये गये। इसके साथ ही समारोह सम्पन्न हुआ।

निस्केयर में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के दौरान मंच पर उपस्थित हैं (बायें से) श्री एस.के. रस्तोगी, वैज्ञानिक-एफ; प्रो. वी.एस. रामामूर्ति, अध्यक्ष, आरएबी; श्री वी.के. गुप्ता, निदेशक, निस्केयर तथा श्री तरुण बैनर्जी, वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, स्थापना दिवस समिति, निस्केयर

प्रो. वी.एस. रामामूर्ति, निस्केयर में सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए

सीईसीआरआई, कारैकुड़ी में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

26 सितम्बर, 2006 को केन्द्रीय विद्युत रसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुड़ी में सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाया गया। श्री एस. जॉन, वरिष्ठतम उपनिदेशक ने स्वागत भाषण देकर मुख्य अतिथि का परिचय कराया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में जनसामान्य के लिए विद्युत रसायन अनुसंधान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर एन. चन्द्रकुमार, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा उन्होंने एनएमआर के विद्युत रसायनिक अनुप्रयोगः चुनौतियां और परिज्ञान के विषय पर सीएसआईआर स्थापना दिवस भाषण दिया। उक्त भाषण प्लेटिनम पर मेथोनॉल के विद्युत रासायनिक ऑक्सीकरण से संबंधित था। उन्होंने अवशोषक धातुरूप बदलने के विषय पर संक्षिप्त जानकारी दी तथा नाइट शिफ्ट, रिलैक्सेशन दर और कोरिंग संबंध के बारे में विचार किया।

डॉ. आर. श्रीनिवासन, वैज्ञानिक सीईसीआरआई में सीएसआईआर स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित वैज्ञानिक विद्यार्थी भेंट में व्याख्यान देते हुए

प्रो. एन. चन्द्रकुमार, आईआईटी, चेन्नई सीईसीआरआई में सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए

उन्होंने एनएमआर (संसूचन अभिज्ञान के लिए 10^{18} 10^{20} स्पिन अपेक्षित) की सुग्राहिता तथा स्किन एफेक्ट पर पता लगाया। उन्होंने एडी करन्ट प्रभाव को कम करने हेतु इलेक्ट्रोड को सेगमेंट में काटने का सुझाव दिया।

श्री एस. जॉन ने सितम्बर 2005 - अगस्त 2006 के दौरान सेवानिवृत्त कर्मचारियों को स्मृतिचिन्ह्न, शॉल तथा सम्मान पत्र से सम्मानित किया। वे कर्मचारी, जो 25 साल के सेवाकाल समाप्त कर चुके हैं, उनको भी स्मृतिचिन्ह्न देकर सम्मानित किया गया। प्रोफेसर एन. चन्द्रकुमार ने अप्रैल 2006 के दौरान हुई स्कूल की बारहवीं कक्षा की विज्ञान विषय की परीक्षा में अच्छे अंक पाकर सफल हुए सीईसीआरआई कर्मचारियों के बच्चों को नकद पुरस्कार प्रदान किया। प्रोफेसर एन. चन्द्रकुमार ने उक्त स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों के बच्चों को तथा बी.टेक विद्यार्थियों को भी पुरस्कार वितरित किया।

श्री ए. मुत्तुकृष्णन, प्रशासन नियंत्रक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

उसी दिन दोपहर को वैज्ञानिक विद्यार्थी भेंट का आयोजन किया गया। डॉ. आर. श्रीनिवासन, वैज्ञानिक ने नैनो-पदार्थों पर भाषण दिया। वैज्ञानिक तकनीकों पर विद्यार्थियों ने वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की।

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल में रजत जयंती एवं सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

26 सितम्बर को प्रतिवर्ष देश के सबसे बड़े वैज्ञानिक संस्थानों में से एक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली का स्थापना दिवस आयोजित किया जाता है। यह वर्ष इसकी मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ स्थित एकमात्र प्रयोगशाला क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल का रजत जयंती वर्ष भी है। 26 सितम्बर, 2006 को क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल के रजत जयंती वर्ष एवं वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस समारोह का आयोजन प्रयोगशाला परिसर में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली के सचिव, डॉ. टी. रामसामी थे। उन्होंने इस अवसर पर क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल की अनुसंधान एवं विकास संबंधी उपलब्धियों पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया। कचरे से कंचन, हल्की सामग्री सूक्ष्म प्रणाली, कम्प्यूटर अनुकरण एवं डिजाइन तथा जल संसाधन प्रबंधन के अंतर्गत प्रयोगशाला की अनुसंधान एवं विकास उपलब्धियों में ग्रामीण क्लाइमेटाइजर एवं आपदा बहुल क्षेत्रों के लिए तुरंत बनने वाले भवन महत्वपूर्ण हैं।

डॉ. टी. रामासामी, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार समारोह में सम्बोधित करते हुए

ग्रामीण क्लाइमेटाइजर, गांवों में फलों और सब्जियों को दूसरे स्थानों पर भेजे जाने के पहले सुरक्षित रखने का काम करता है। यह कम बिजली से चलता है। इसे एल्यूमिनियम फोम की खुली कोशाओं का तापमान कम करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

आपदा बहुल क्षेत्रों के लिए तुरंत बनने वाले भवन पूरी तरह अलग-अलग करके रखे जा सकने वाले भवन हैं। ये हल्के हैं, मूल्य प्रभावी हैं और इन्हें आसानी से परिवहन किया जा सकता है। इन्हें जोड़ने में बहुत कम समय लगता है और इनके निर्माण में फ्लाई एश जैसे अपशिष्टों का प्रयोग किया जाता है।

डॉ. महेश शर्मा, महानिदेशक, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद एवं म.प्र. शासन के वैज्ञानिक सलाहकार समारोह में विशिष्ट अतिथि थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि ने भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान परिदृश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि वैज्ञानिकों को अपने ज्ञान को जनजीवन के हित के लिए प्रयोग में लाना चाहिए। अनुसंधान में हमारा निवेश हमारी क्षमताओं के अनुपात में नहीं हैं। इस क्षेत्र में उपयुक्त निवेश के अभाव में युवा उन क्षेत्रों में जाते हैं, जहां विज्ञान का प्रबंधन विज्ञान के सृजन से अधिक आकर्षक है। उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की भविष्य की योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि डॉ. महेश शर्मा ने क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला के साथ मिलकर आम रूचि के क्षेत्रों में काम करने की आशा व्यक्त की।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला के निदेशक डॉ. एन. रामाकृष्णन ने सीएसआईआर एवं प्रयोगशाला की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रयोगशाला की आगामी योजनाओं को भी रेखांकित किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. कुणाल बसु, वैज्ञानिक ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। यह केन्द्र निम्नलिखित गतिविधियों के अंतर्गत कार्यरत रहेगाः

• सिसल एवं केला, कॉयर, अनन्नास, ताड़, पटसन एवं जूट जैसे अन्य प्राकृतिक रेशों का प्रसंस्करण, निष्कर्षण, बुनना एवं कपड़ा बनाना।

• विभिन्न बहुलकों एवं प्राकृतिक रेशों का प्रयोग करते हुए अपशिष्ट फिलर्स के साथ या उनके अभाव में सम्मिश्र विकास

• रेशों एवं बहुलकों का प्रयोग कर ग्रैडिएन्ट बहुलक सम्मिश्रों का विकास

• विभिन्न प्रक्षेत्रों, जैसे ग्रामीण, मोटरकार, परिवहन, रेलवे, भूवस्त्र एवं चर्म सम्मिश्र के लिए घटकों के निर्माण हेतु प्राकृतिक रेशा प्रबलित बहुलक सम्मिश्रों का विकास

मुख्य अतिथि ने प्रयोगशाला के आंतरिक पुरस्कारों का वितरण किया। सर्वोत्तम प्रकाशन पुरस्कार 1. डॉ. एस.के. सांघी एवं सहलेखकों तथा 2. डॉ. मोहिनी सक्सेना एवं सहलेखकों को प्राप्त हुआ। सर्वाधिक प्रकाशन प्रभाव पुरस्कार डॉ. डी.पी. मंडल को दिया गया। प्रारंभ की गई सर्वोत्तम परियोजना का पुरस्कार (1) डॉ. ए.के. मजुमदार एवं उनके समूह को एवं (2) डॉ. बी.के. प्रसाद एवं उनके समूह को दिया गया। सर्वोत्तम ग्रामीण प्रौद्योगिकी परियोजना का पुरस्कार डॉ. मोहिनी सक्सेना एवं समूह को दिया गया। सर्वोत्तम आंतरिक प्रतिवेदन का पुरस्कार श्री संजय पंथी एवं डॉ. सुनीता सावला को दिया गया। सर्वाधिक आंतरिक प्रतिवेदन हेतु पुरस्कार पर्यावरण अभियांत्रिकी एवं आपदा मॉडलिंग को दिया गया। सर्वोत्तम सेवा प्रकोष्ठ का पुरस्कार उपस्कर संसाधन प्रकोष्ठ को एवं इसी श्रेणी में विशेष जूरी पुरस्कार ग्रामीण दीर्घा की स्थापना के लिए दिया गया। राजभाषा में सर्वोत्तम शोधपत्र के लिए डॉ. एस.पी. नारायण एवं साथियों ने पुरस्कार प्राप्त किया। कनिष्ठ शोध अध्येता, वरिष्ठ शोध अध्येता, परियोजना सहायक तथा अनुसंधान एसोसिएट द्वारा लिखे गये सर्वोत्तम शोध पत्र का पुरस्कार सुश्री सुषमा लाम्बा को दिया गया। तकनीकी/प्रशासनिक कार्मिकों को दिये जाने वाले मानदेय के अन्तर्गत श्री एम.एल. गुर्जर, श्री भरत पाटिल, श्री एन.एस. जादव, श्रीमती श्यामला सोमन, श्री संतोष बाथम एवं डॉ. मनीषा दुबे को दिये गये।

परिषद की सेवा के पच्चीस वर्ष पूरे करने के लिए कार्मिकों को स्मृति चिह्न भेंट किये गये।

डॉ. आर.एन. यादव, वैज्ञानिक-जी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

एनसीएल में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे ने 26 सितम्बर, 2006 को सीएसआईआर का 64वां स्थापना दिवस मनाया। प्रो. आर. नरसिम्हा, एफआरएस, जवाहर लाल नेहरू प्रगत वैज्ञानिक अनुसंधान केन्द्र, बेंगलूर ने इस अवसर पर सीएसआईआर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला प्रत्येक वर्ष सीएसआईआर स्थापना दिवस के रूप में सीएसआईआर के **निर्माता** श्रृंखला के अन्तर्गत व्याख्यान देने के लिए सीएसआईआर परिवार के किसी एक प्रतिष्ठित सदस्य को आमंत्रित करती है। प्रो. नरसिम्हा जो एक उत्कृष्ट वांतरिक्ष वैज्ञानिक हैं, सन् 1984 से 1993 तक राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं, बेंगलूर के निदेशक थे। प्रो. नरसिम्हा के व्याख्यान का विषय था – **वैमानिकी प्रगति एवं विमानन प्रगति में एकरूपता।**

डॉ. बी.डी. कुलकर्णी, कार्यवाहक निदेशक, एनसीएल ने प्रो. नरसिम्हा एवं उपस्थित जनसमूह का स्वागत करते हुए कहा कि प्रो. नरसिम्हा तरल यांत्रिकी, वांतरिक्ष अभियांत्रिकी तथा वायुमण्डलीय विज्ञान के एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक हैं। एक चिन्तक और अध्यापक के रूप में प्रो. नरसिम्हा ने सदैव नए और रोचक तथ्यों पर प्रकाश डाला है। डॉ. कुलकर्णी ने राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाओं को एक शानदार, आत्मनिर्भर तथा प्रभावशाली अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला के रूप में परिवर्तित करने के लिए प्रो. नरसिम्हा के प्रयासों की सराहना की।

प्रो. नरसिम्हा ने अपने व्याख्यान में कहा कि भारत में वैमानिकी उद्योग की स्थापना के द्वारा विमानन उद्योग की प्रगति में समानता लाई जानी चाहिए। उन्होंने भारतीय नागर विमानन उद्योग की प्रगति की तुलना वैमानिकी के विकास के साथ की और भारतीय निजी क्षेत्र से अनुरोध किया कि वे भारत में वांतरिक्ष तथा विमानन उद्योग में अपनी महती भूमिका अदा करें। उन्होंने नागर विमानन के क्षेत्र में नई नीतियां बनाने का सुझाव दिया ताकि इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जा सके। उन्होंने विशेष रूप से देश के कम जुड़े हुए भागों में विमानन क्षेत्र को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ने और उनकी क्षमता को बढ़ाने की अपील की।

प्रो. नरसिम्हा ने इस अवसर पर पिछले एक वर्ष के दौरान सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों को तथा उन कर्मचारियों को भी जिन्होंने सीएसआईआर में अपनी सेवा के 25 वर्ष पूरे कर लिए हैं, स्मृतिचिह्न प्रदान किए। उन्होंने विज्ञान प्रश्नमंच प्रतियोगिता के विजेता स्कूली छात्रों तथा कर्मचारियों के उन बच्चों को, जिन्होंने बारहवीं कक्षा की परीक्षा में विज्ञान तथा गणित विषयों में 90 प्रतिशत तथा उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं, नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर सीएसआईआर उत्कृष्ट योगदान देने वाले कार्मिकों/दलों को विभिन्न पुरस्कार देकर सम्मानित करती है। इस वर्ष भी एनसीएल के दो वैज्ञानिकों - डॉ. आशीष लेले को अभियांत्रिकी विज्ञान में प्रतिष्ठित शान्तिस्वरूप भटनागर से तथा डॉ. श्रीनिवास होता को रासायनिक विज्ञान में सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

निस्केयर में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

संस्थान में दिनांक 8 सितम्बर से 22 सितम्बर 2006 को हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का आरम्भ प्रभारी, राजभाषा की एक अपील से किया गया जिसमें संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक दैनिक कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया गया था। इस अवसर पर विभिन्न कार्यदिवसों पर संस्थान के दोनों परिसरों में चार प्रतियोगिताओं यथा हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, समाचार-वाचन प्रतियोगिता तथा अन्ताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बहुत ही उत्साह से भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़े का समापन दिनांक 22 सितम्बर 2006 को किया गया। इस अवसर पर हास्य व्यंग्य के सुप्रसिद्ध कवि श्री महेन्द्र अजनबी को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ मुख्य अतिथि तथा निदेशक, श्री वी.के. गुप्ता के स्वागत से किया गया तथा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया।

श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रभारी राजभाषा ने राजभाषा इकाई द्वारा वर्षभर में की गई गतिविधियों की जानकारी दी।

संस्थान के निदेशक महोदय ने इस अवसर पर जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि राजभाषा इकाई संस्थान में अच्छा कार्य कर रही है तथा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सुचारू रूप से कार्यरत है तथा इसके लिए बधाई की पात्र भी है।

इसके पश्चात मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए उन्हें कविता-पाठ के लिए आमंत्रित किया गया। सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री महेन्द्र अजनबी ने अपने हास्य व्यंग्य से भरपूर कविता-पाठ द्वारा उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया।

श्रीमती प्रकाश कौर, वित्त एवं लेखा नियंत्रक ने अपने सम्बोधन में उपस्थित जनसमूह को अपना कार्यालयी दैनिक कार्य हिन्दी में करने की अपील करते हुए कहा कि हिन्दी में करने की अपील करते हुए कहा कि हिन्दी में कार्य करना बेहद सरल है, बस आवश्यकता है तो एक शुरूआत की।

इस अवसर पर अतिथि महोदय द्वारा प्रकाशित राजभाषा वार्षिक पत्रिका संचेतना का भी विमोचन किया।

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान मंच पर उपस्थित हैं (बायें से) श्रीमती दीक्षा बिष्ट, श्री वी.के. गुप्ता, निदेशक, श्रीमती प्रकाश कौर, श्री बी.सी. कश्यप, प्रमुख, लोकप्रिय विज्ञान विभाग

सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री महेन्द्र अजनबी काव्य पाठ करते हुए

दर्शकगण - एक झलक

तत्पश्चात विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को मुख्य अतिथि तथा संस्थान के निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये।

अन्त में लोकप्रिय विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. बी.सी. कश्यप ने धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए समारोह के सफल आयोजन के लिए प्रतिभागी सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का आभार प्रकट किया और इसके साथ ही कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

केन्द्रीय नमक तथा समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर में हिन्दी सप्ताह

संस्थान में प्रतिवर्ष की तरह हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दि. 07.09.2006 से 14.09.2006 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत (1) हिन्दी टाइपिंग स्पर्धा (2) हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन (3) फिल्म शो (4) वैज्ञानिक व्याख्यान (5) तस्वीर क्या बोलती है? प्रतियोगिता (6) समाचार वाचन प्रतियोगिता (7) यादगार प्रसंग प्रतियोगिता और (8) प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया था।

हिन्दी सप्ताह के दौरान संस्थान के वैज्ञानिक/तकनीकी कर्मचारियों/प्रोजेक्ट सहायकों द्वारा हिन्दी में, वैज्ञानिक विषयों पर ग्यारह व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

हिन्दी सप्ताह समापन समारोह का आयोजन दिनांक 14.09.2006 को किया गया। जिसमें भावनगर के शामलदास आर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ए.ए. शेख विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सर्वप्रथम राजभाषा कार्यान्वय समिति के समन्वयक डॉ. पी.एस. आनन्द ने सबका स्वागत करते हुए विशेष अतिथि का परिचय दिया। तत्पश्चात डॉ. आर.एस. शुक्ला ने हिन्दी विभाग की गतिविधियों के बारे में विशेष अतिथि को जानकारी देते हुए हिन्दी सप्ताह के दौरान संपन्न विविध कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

विशेष अतिथि डॉ. ए.ए. शेख ने अपनी प्रभावी शैली में राजभाषा हिन्दी का गौरव बढ़ाने के लिये कहा। हिन्दी ही साम्प्रदायिक, भौगोलिक, मानसिक दूरियां कम करने में सक्षम है। सभाध्यक्ष डॉ. आर.वी. जसरा ने हिन्दी साहित्य के गौरवशाली इतिहास का संक्षिप्त वर्णन करते हुए राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन में सबको सक्रिय योगदान देने के लिये अनुरोध किया। राजभाषा अधिकारी श्री बि.म. शाह ने सबका धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती दिना भट्ट ने किया।

सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़ में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान, चण्डीगढ़ में दि. 01.09.06 से 14.09.06 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

दिनांक 14.09.06 को संस्थान के सभागार में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. गिरीश साहनी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सर्वप्रथम इस समारोह का मुख्य आकर्षण हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगता आयोजित की गई जिसका विषय था - **अपनी देशभक्ति का सबूत देते रहना हर नागरिक का कर्त्तव्य है**, जिसमें संस्थान के सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की। डॉ. साहनी ने इस अवसर पर संदेश देते हुए संस्थान के सदस्यों को कर्तव्यनिष्ठा की ओर प्रेरित किया कि नियमों का पालन करना हमारा कर्त्तव्य है और राजभाषा हिन्दी को अपनाना हमारी संवैधानिक आवश्यकता है। उन्होंने वाद-विवाद में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि रोचक विषयों पर हिन्दी में की गई बातचीत से संस्थान में हिन्दी के प्रयोग के लिए सकारात्मक वातावरण उत्पन्न होगा। कार्यक्रम का संचालन सुश्री नवनीत आनंद, वरिष्ठ अनुवादक ने किया तथा संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला कि संस्थान में समस्त कार्यकलाप द्विभाषी करने का प्रयास किया जाता है और इसी कड़ी में इस अवसर पर घोषणा की गई कि हिन्दी दिवस के अवसर पर संस्थान में प्रयोग में लाए जाने वाले फार्मों का द्विभाषी रूप संस्थान के वेबसाइट पर ऑनलाइन उपलब्ध करा दिया गया है। सभागार में उपस्थित सभी सदस्यों ने इस सुविधा का करतल ध्वनि से स्वागत किया। इसके पश्चात निदेशक, इमटैक द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित विज्ञान पर हिन्दी में स्लोगन लेखन प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण, हिन्दी शब्दावली, हिन्दी पत्र/आवेदन लेखन, तस्वीर क्या बोलती है? हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को तथा वर्षभर की गतिविधियों के विजेताओं को व हिन्दी में मूल कामकाज की प्रोत्साहन योजनाओं में भाग लेने वाले सदस्यों को पुरस्कार वितरित किए। इसके अतिरिक्त सीएसआईआर के विज्ञान में युवा नेतृत्व कार्यक्रम की तरह वर्तमान शिक्षा वर्ष से आरंभ की गई स्कूली छात्रों के लिए हिन्दी में विशेष योग्यता प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार प्रदान करने की प्रोत्साहन योजना के तहत भी इमटैक सदस्यों के बच्चों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में दि. 14 सितम्बर से 21 सितम्बर, 2006 की अवधि में हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। इस अवधि में प्रयोगशाला के स्टाफ हेतु चार प्रतियोगिताएं तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के छात्रों के लिए दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समारोह के प्रथम दिन 14 सितम्बर, 2006 को हिन्दी दिवस के अवसर पर प्रयोगशाला की वार्षिक राजभाषा पत्रिका **एनसीएल आलोक** का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। इस पत्रिका का विमोचन मुख्य अतिथि पुणे विमानपत्तन प्राधिकरण के निदेशक कैप्टन दीपक शास्त्री एवं प्रयोगशाला के कार्यवाहक निदेशक डॉ. भास्कर कुलकर्णी के द्वारा संयुक्त रूप से सम्पन्न हुआ। इसी दिन भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणे के छात्रों के लिए हिन्दी शब्दज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 33 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रयोगशाला के स्टाफ के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण प्रतियोगिता, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता तथा प्रयोगशाला के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए हिन्दी सुलेख एवं शुद्धलेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। विशेष रूप से चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए पहली बार आयोजित इस प्रतियोगिता में 22 कर्मचारियों ने भाग लिया।

समापन समारोह का आयोजन दिनांक 21 सितम्बर, 2006 को अपराह्न 3.00 बजे प्रयोगशाला के व्याख्यान-कक्ष में किया गया। समापन समारोह का प्रारम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वन्दना से शुरू हुआ। इस अवसर पर हिन्दी विभाग, पुणे विश्वविद्यालय के प्रमुख प्रो. (डॉ.) तुकाराम पाटील मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डॉ. के.एन. गणेश भी विशेष अतिथि के रूप में इस समारोह में शामिल हुए। मुख्य अतिथि डॉ. तुकाराम पाटील, विशेष अतिथि डॉ. के.एन. गणेश एवं प्रयोगशाला के कार्यवाहक निदेशक डॉ. भास्कर कुलकर्णी ने संयुक्त रूप से सभी विजेता स्टाफ सदस्यों एवं छात्र-छात्राओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए। पुरस्कार वितरण के बाद मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए डॉ. पाटील ने राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी की व्यापकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज हिन्दी केवल भारत में ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी अपरिहार्यता का अहसास करा चुकी है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी एक सशक्त और समृद्ध सम्पर्क भाषा के रूप में पूरे हिन्दुस्तान को एकता के सूत्र में बांधे हुए है। यही एक भाषा है जिससे सभी देशवासी परस्पर सम्पर्क कर सकते हैं। डा. तुकाराम पाटील ने कहा कि वर्तमान में 135 विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का कार्य चल रहा है।

इस प्रकार हिन्दी विदेशों में भारत की पहचान बना चुकी है। भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डॉ. के.एन. गणेश ने सम्बोधन में कहा कि हमारे संस्थान के लिए यह एक अच्छा अवसर उपलब्ध हुआ है जब हमारे छात्रों को हिन्दी में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर मिला। हम चाहते हैं कि इस देश में विज्ञान और हिन्दी साथ-साथ चले और हमें आशा है कि हमारा यह संस्थान इस दिशा में अग्रणी रहेगा।

समापन समारोह के अन्त में कार्यवाहक निदेशक, डॉ. भास्कर कुलकर्णी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के प्रति अपना गहन समर्पण भाव प्रदर्शित करते हुए कहा कि हमें आज इस अवसर पर हिन्दी को अधिक अपने प्रयोग में लाने के लिए एक कार्य योजना बनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दी एक विशिष्ट वैज्ञानिक भाषा है। इसके व्याकरण और इसके शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अर्थ में एक सुन्दर व्यवस्था झलकती है। उनका विचार था कि हमें हिन्दी के विकास के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए। समारोह के अन्त में हिन्दी अधिकारी, श्री उमेश गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन किया। हिन्दी सप्ताह समापन समारोह के प्रारंभ में डॉ. रमाशंकर व्यास, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने सभी का स्वागत किया और हिन्दी सप्ताह समापन समारोह की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए हिन्दी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं के महत्व और उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस समारोह में पुणे शहर के हिन्दी जगत के कुछ विद्वान भी अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

नीरी नागपुर में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

संस्थान में दिनांक 01-14 सितम्बर, 2006 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं दैनिक कार्य में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि संबंधी प्रयास किए गए तथा हिन्दी टिप्पण व आलेखन तथा शब्द निर्माण एवं शब्दक्रम, निबंध, सामान्य ज्ञान एवं प्रशासनिक अनुवाद प्रतियोगिता और प्रशासनिक हिन्दी कार्यशाला आदि का आयोजन भी किया गया।

दिनांक 14 सितम्बर, 2006 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. किरण शंकर मिश्र, अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं उप महानिदेशक, भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण (मध्य क्षेत्र), नागपुर इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।

समारोह के आरंभ में डॉ. गुप्त ने मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने भाषण में संस्थान में वर्ष के दौरान हुए हिन्दी के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

इस समारोह के अवसर पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. किरण शंकर मिश्र के कर-कमलों द्वारा संस्थान की **पर्यावरण पत्रिका** के पर्यावरण एवं प्लास्टिक विशेषांक का विमोचन भी किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. किरण शंकर मिश्र ने अपने अभिभाषण में कहा कि आज की प्रतियोगिता में जो जागरूकता प्रतिभागियों में देखने को मिली। उसकी पर्यावरण संरक्षण के लिए आज हमें जरूरत है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के बारे

डॉ. किरण शंकर मिश्र, मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए बायें से श्री वी.के. शंकरन, प्रशासनिक अधिकारी, डॉ. अपूर्व गुप्त, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. जे.एस.पाण्डेय, विज्ञान सचिव

में बोलते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी हमें एक-दूसरे से जोड़ती है। यह सबको अभिव्यक्ति का अवसर देती है। हिन्दी के लिए प्रत्येक व्यक्ति की स्वयं की रूचि होनी चाहिए। हिन्दी प्रतिशत आदि के दबाव में कार्य न कर अपनी स्वयं की अभिरूचि से कार्य करना चाहिए। इसके लिए हमें मन की झिझक दूर करनी होगी। हिन्दी भाषा का शब्द-भंडार बहुत विशाल है। सभी भाषाओं का मूल एक ही है तथा संस्कृत की मूल ध्वनियों से बहुत से अंग्रेजी शब्द बने हैं।

इस अवसर पर वर्ष 2005-06 में सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने तथा मूलतः हिन्दी में टिप्पण आलेखन/पत्राचार करने के लिए भारत सरकार की प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अंतर्गत विभिन्न अनुभागों के कुल 09 कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया गया। संस्थान के **बिल अनुभाग तथा भू-पर्यावरण प्रबंध प्रभाग** को संयुक्त रूप से वर्ष 2005-2006 में हिन्दी में सर्वाधिक एवं उल्लेखनीय कार्य करने हेतु महादेवी वर्मा चल वैजयंती प्रदान की गई तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिन्दी टिप्पण व आलेखन तथा शब्द निर्माण एवं शब्दक्रम, निबंध, सामान्य ज्ञान एवं प्रशासनिक अनुवाद प्रतियोगिता के विजेताओं तथा पखवाड़ा के दौरान ऑन-लाईन माथा-पच्ची विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए।

इस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि को संस्थान की ओर से एक स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

समारोह के अन्त में श्री वी.के. शंकरन, प्रशासनिक अधिकारी ने आभार प्रदर्शन करते हुए संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए कहा। श्री सोमेश्वर पाण्डेय, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक ने इस कार्यक्रम का मंच संचालन किया।

सीएफआरआई, धनबाद में हिन्दी पखवाड़ा संपन्न

केन्द्रीय ईंधन अनुसंधान संस्थान में 1 से 14 सितम्बर 2006 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. शेषानंद मधुकर, भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, संत कोलंबा महाविद्यालय, हजारीबाग, ने इस अवसर पर विविध क्षेत्रों में हिन्दी की उपयोगिता एवं उसके महत्व पर अपना सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उद्घाटन के साथ-साथ आकाशवाणी, रांची के वरिष्ठ उद्घोषक कुमार वृजेंद्र के संचालन में एक आकर्षक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस आयोजन में डंडा बनारसी (बनारस), डॉ. सुरजीत सिंह नवदीप (रायपुर), परिमल प्रवीण (गया), के साथ-साथ मुख्य अतिथि डॉ. मधुकर ने भी भाग लिया।

निदेशक, डॉ. एस.के. श्रीवास्तव (दायें) स्वयं भी वैज्ञानिक शोधपत्र लेखन में संयुक्त प्रतिभागी श्री जी.के. प्रसाद के साथ पुरस्कार ग्रहण करते हुए

हिन्दी पखवाड़ा अवधि में वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त वर्ष भर में इन दोनों क्षेत्रों में हिन्दी में किये गये कार्य मूल्यांकित कर कुल 101 प्रतिभागी प्रमाण-पत्र, नगद राशि एवं प्रोत्साहनार्थ भेंट से समापन दिवस 14 सितम्बर 2006 को पुरस्कृत किये गये। स्थानीय छात्र-छात्राओं के लिए दो ग्रुपों में हिन्दी वाक् प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यकारी निदेशक डॉ. एस.के. श्रीवास्तव ने हिन्दी शिक्षक श्रीमती अनिता के सक्रिय सहयोग से प्रत्येक ग्रुप के 10-10 विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राणा योगेन्द्र नारायण परमार, मंडल अभियंता, बीएसएनएल, धनबाद ने समापन आख्यान प्रस्तुत किया। 14 सितम्बर को संस्थान के क्लब हॉल में सांस्कृतिक आयोजन सुर संध्या के साथ हिन्दी पखवाड़ा सम्पन्न हुआ। विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन हिन्दी अधिकारी श्री जी.के. प्रसाद ने किया। धन्यवाद प्रस्ताव हिन्दी पखवाड़ा समिति अध्यक्ष डॉ. जी. घोष एवं श्री एम.पी. पांडेय, वैज्ञानिक द्वारा दिया गया।

सीएमईआरआई में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

केन्द्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान परिषद, दुर्गापुर में हिन्दी पखवाड़ा समारोह दिनांक 1 सितम्बर से 14 सितम्बर तक उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस दौरान संस्थान के कर्मियों तथा उनके बच्चों के लिये विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन दिनांक 1 सितम्बर को किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री वी.पी. गौड़ तथा सम्मानित अतिथि वक्ता के रूप में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुर्गापुर के सदस्य-सचिव श्री नंदकिशोर मिश्र उपस्थित थे। निदेशक महोदय की अनुपस्थिति में वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री संजय राय ने स्वागत भाषण देते हुए श्री गौड़ के साथ-साथ प्रेक्षागृह में उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया। उद्घाटन दिवस के सम्बोधन में श्री गौड़ ने राजभाषा हिन्दी के ऐतिहासिक महत्व के बारे में बताया तथा वर्तमान परिदृश्य में इसके प्रचार-प्रसार पर बल देने का आह्वान करते हुए हिन्दी को सम्मानित भाषा का दर्जा अपने मन में देते हुए इसे कार्यालयीन रूप में अंगीकार करने का आह्वान किया।

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह दिनांक 14 सितम्बर, 2006 को मनाया गया। इस अवसर पर सीएमईआरआई के निदेशक श्री गोपाल प्रसाद सिन्हा ने स्वागत भाषण देते हुए सर्वप्रथम प्रेक्षागृह में उपस्थित संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया और हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में अधिक संख्या में भाग लेने के लिए उनको धन्यवाद दिया साथ ही उन्होंने संस्थान में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन हेतु समस्त कार्मिकों को कर्त्तव्यबोध कराते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हम एक स्वर में एक साथ बेझिझक होकर राजभाषा हिन्दी को कार्यालयीन कार्यों में अंगीकार करें तथा विश्व के क्षितिज पटल पर भारत को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका निभाएं। उन्होंने कहा कि हिन्दी का विकास तभी संभव है जब हम अपने ह्रदय से हिन्दी के प्रति हीन भावना का परित्याग करें और उस मिथ्या बोध को तोड़ने का प्रयास करें कि हिन्दी में कार्य कठिन है।

समापन समारोह के अंत में धन्यवाद ज्ञापन अनुभाग अधिकारी (भर्ती) श्री बी.के. कर ने दिया और मंच संचालन श्रीमती मुनमुन गुप्ता ने किया। धन्यवाद ज्ञापन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आरंभ हुआ जिसके अंतर्गत विख्यात हास्य कवि श्री अंबारी लाल बिहारी ने हिन्दी में हास्य कविता पाठ किया। इसके बाद सुगम संगीत प्रतियोगिता के विजेताओं ने संगीत कार्यक्रम की मनोहर प्रस्तुति की और अंत में अतिथि कलाकारों द्वारा संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

सीईसीआरआई, कारैकुड़ी में हिन्दी पखवाड़ा समारोह

केन्द्रीय विद्युत रसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुड़ी में दिनांक 14.09.2006 से 27.09.2006 तक बड़े उमंग, हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ हिन्दी पखवाड़ा के रूप में मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रोफेसर ए.के. शुक्ल, निदेशक ने पखवाड़े का औपचारिक रूप में उद्घाटन करते हुए अपने प्रेरणात्मक अध्यक्षीय भाषण के माध्यम से लोगों को हिन्दी में कामकाज करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सभी को विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेने का भी आग्रह किया।

तिरुच्चिराप्पल्लि स्थित सेंट जोसफ कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं रीडर डॉ. के.एस. प्रणतार्तीहरन समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने हिन्दी दिवस के उद्घाटन भाषण में कहा कि **हिन्दी के प्रयोग से देश की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दूरी घटी है तथा पूरे देशवासी राष्ट्रीय एकता की इस कड़ी से जुड़े हैं। यही कारण है कि पूर्व से पश्चिम तक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक हम जहां भी जाते हैं हमें राष्ट्रभाषा हिन्दी का अलख जगता हुआ मिलता है।** उन्होंने राष्ट्रीय भावना और एकता के प्रचार-प्रसार में जुड़े विभिन्न संतों तथा धार्मिक महापुरूषों द्वारा की गयी महत्वपूर्ण सेवाओं पर प्रकाश

समापन समारोह के अतिथि वक्ता डॉ. टी.एस. ताण्डवमूर्ति

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की झलक

उद्घाटन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. ए.के. शुक्ला

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी दिवस पर भाषण देते हुए डॉ. के.एस. प्रणतार्तीहरन

डाला।

मुख्य अतिथि ने **प्रतिदिन एक हिन्दी शब्द सीखें** शीर्षक के एक त्रिभाषी सहायक साहित्य का विमोचन भी किया।

श्री एन.यू. नायक, अध्यक्ष, हिन्दी पखवाड़ा समारोह समिति ने सभा का स्वागत किया तथा श्री ए. मुत्तुकृष्णन, प्रशासन नियंत्रक के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ उद्घाटन समारोह समाप्त हुआ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष, श्री एन.यू. नायक, उपनिदेशक के देखरेख में हिन्दी निबंध लेखन, श्रुतलेखन, अनुवाद, प्रश्नोत्तरी, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, हिन्दी गायन, हिन्दी वाक् तथा आशु भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

समापन समारोह में श्री एस. जॉन, वरिष्ठम उपनिदेशक ने समारोह की अध्यक्षता की। डॉ. टी.एस. ताण्डवमूर्ति, अध्यक्ष, सिविल इंजीनियरी विभाग, डॉ. एम.जी.आर. इंजीनियरिंग कॉलेज, चेन्नई इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और उन्होंने संरचना एवं क्षति के विषय पर हिन्दी में एक वैज्ञानिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्राकृतिक आपदाओं के कारण पुल, भवन आदि निर्माणों पर होनेवाली क्षति और उसके निवारक उपायों तथा बचाव के बारे में सरल एवं स्पष्ट भाषा में सूचनाप्रद भाषण दिया।

मुख्य अतिथि डॉ. टी.एस. ताण्डवमूर्ति के कर-कमलों द्वारा विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण कर उत्साहित किया गया।

श्री ए. मुत्तुकृष्णन, प्रशासन नियंत्रक ने हिन्दी पखवाड़े के आयोजन संबंधी एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री एन.यू. नायक, अध्यक्ष, हिन्दी पखवाड़ा समारोह समिति के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल में हिन्दी दिवस कार्यक्रम

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल में दिनांक 14 सितम्बर, 2006 को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार एवं आलोचक श्री भगवत रावत मुख्य अतिथि थे।

सप्ताह के प्रथम चरण में 7 सितम्बर, 2006 से प्रयोगशाला के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं -- अनुवाद, श्रुतलेख, टिप्पण, तात्कालिक भाषण तथा प्रश्नमंच का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की।

हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री भगवत रावत ने कहा कि भाषा अंतःकरण से ही आती है और यह प्रेम से ही सीखी जा सकती है। वास्तव में भाषा जरुरत से ही पैदा होती है।

अनुवाद की भाषा के संबंध में बात करते हुए उन्होंने कहा कि एक भाषा दूसरी भाषा का स्थानापन्न नहीं हो सकती। भाषा की प्रकृति को कभी चुनौती नहीं देनी चाहिए और भाषा का मानकीकरण भी जीवन के माध्यम से ही होता है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रयोगशाला के निदेशक श्रेणी वैज्ञानिक डॉ. कुणाल बासु ने प्रयोगशाला में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किये जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि सभी को एक सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी आवश्यक है।

प्रयोगशाला के प्रशासन नियंत्रक श्री सुनील कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए अतिथि का परिचय दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने प्रयोगशाला की राजभाषा पत्रिका **सोपान** का विमोचन किया। मुख्य अतिथि ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। मुख्य अतिथि ने

हिन्दी दिवस समारोह का दृश्यः मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार श्री भगवत रावत (बीच में) उद्बोधन देते हुए

इस अवसर पर स्टाफ सदस्यों को राजभाषा में कार्यालयीन कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार भी वितरित किए।

डॉ. एस.ए.आर. हाशमी, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा दुबे, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक एवं श्री संजय भावसार, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक द्वारा किया गया।

आरआरएल, जोरहाट में हिन्दी सप्ताह का आयोजन

14 सितम्बर 2006 को क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (आरआरएल) जोरहाट में हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया। समारोह की मुख्य अतिथि डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय के असमिया भाषा विभाग की प्रोफेसर निराजना महंत बेजबोरा थीं। श्रीमति बेजबोरा असमिया भाषा विभाग में तुलनात्मक साहित्य की प्रोफेसर हैं, उन्होंने हिन्दी में एम.ए. एवं डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। वस्तुतः उन्हें हिन्दी एवं असमिया दोनों भाषा एवं साहित्य का सर्वोत्तम ज्ञान है। अतिथि के रूप में उन्होंने कहा कि हिन्दी भारत की भाषाई पहचान है, हमें अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए साथ-साथ अपनी भारतीय अस्मिता और पहचान को बुलंद करने के लिए हिन्दी भाषा सीखनी चाहिए। उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी को नमन करते हुए कहा कि विश्व आज एक गांव के रूप में उभर रहा है ऐसे में अपनी पहचान खोने की चिन्ता ज्यादा हो रही है। उनके अनुसार भारत सरकार हिन्दी में तकनीकी शब्दों के निर्माण एवं कार्यालयों में राजभाषा के व्यापक प्रयोग के लिए सतत प्रयत्नशील है।

अन्य वर्षों की तरह इस वर्ष भी भारत सरकार के राजभाषा नीति के अन्तर्गत प्रयोगशाला में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य 7 से 14 सितम्बर तक राजभाषा सप्ताह मनाया गया। कार्यालयीन प्रयोग में राजभाषा हिन्दी के प्रचलन को विकसित करने के क्रम में इस सप्ताह के अंतर्गत हिन्दी कार्यशाला एवं कई हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित

(बायें से) प्रशासन नियंत्रक श्री जे. शंकर राव, मुख्य अतिथि प्रो. निराजना महंत बेजबोरा, प्रभारी निदेशक, डॉ. डी.सी. गोस्वामी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. पी.बी. कांजीलाल

की गईं। इस अवसर पर आयोजित हिन्दी कार्यशाला में मुख्य वक्ता श्री एस. कुंवर, राजभाषा अधिकारी, केन्द्रीय मूगा एवं एरी अनुसंधान संस्थान, जोरहाट ने व्याख्यान दिया। इसमें प्रयोगशाला के प्रभारी, राजभाषा श्री अजय कुमार ने भी कार्यालय में प्रयोग में आने वाली हिन्दी के संबंध में व्याख्यान दिया।

सप्ताह का समापन हिन्दी दिवस के मुख्य कार्यक्रम के साथ किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के अलावा यहां के प्रभारी, निदेशक डॉ. डी.सी. गोस्वामी ने सभाध्यक्ष के रूप में अपने संक्षिप्त भाषण में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने प्रयोगशाला में राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए किये जा रहे प्रयासों को सन्तोषप्रद बताया एवं लक्ष्य पूरा करने के लिए हिन्दी के प्रयोग को और भी बढ़ाने की अपील की।

कार्यक्रम के आरम्भ में डॉ. पी.बी. कांजीलाल वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं उपाध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि का स्वागत किया। प्रशासन नियंत्रक श्री जे. शंकर राव ने राजभाषा के रूप में हिन्दी के विकास का ब्यौरा प्रस्तुत किया एवं देश में एक भाषा होने की आवश्यकता को बताते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार पर बल दिया। संविधान में राजभाषा हिन्दी के स्थान का उल्लेख करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन की आवश्यकता की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का संचालन राजभाषा प्रभारी श्री अजय कुमार ने किया।

अन्त में पुरस्कार वितरण तथा श्री अजय कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के उपरांत समारोह सम्पन्न हुआ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में हिन्दी माह समापन समारोह का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में आयोजित हिन्दी माह समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए साहित्यकार प्रो. सूरज पालीवाल ने वैश्वीकरण एवं भू-मंडलीकरण के इस युग में भाषा और संस्कृति पर चारों ओर से हो रहे हमले की चर्चा करते हुए इस स्थिति पर अपनी गहरी चिन्ता व्यक्त की और बताया कि किस प्रकार हम भारतीय अपने संकल्प, साहस, आत्मविश्वास और विवेक की कमी के कारण विदेश, विशेषतः अमेरिका को अपने आदर्श के तौर पर देख रहे है। हमारे देश की गरीब जनता से प्राप्त करों से उच्च तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त प्रतिभा का पलायन अमेरिका आदि देशों की ओर हो रहा है। यह हमारे देश की बहुत बड़ी हानि है। हमारे देश की यह हानि विदेशों के लिए लाभ का विषय है क्योंकि हमारे देश में लाखों रुपयों के व्यय से तैयार विशेषज्ञ उन्हें निशुल्क ही प्राप्त हो जाते हैं। प्रो. पालीवाल का विचार था कि हिन्दी दिवस अथवा हिन्दी माह 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान द्वारा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए लिये गए संकल्प को स्मरण रखने का दिन है। हम भूल जाते हैं कि जिस अमेरिका की ओर हम आशा-भरी दृष्टि से देखते हैं, उस देश ने इंग्लैंड की अंग्रेजी से भिन्न शैली की अंग्रेजी अपनाई है। स्वयं इंग्लैंड में तीन भाषाएं है, जिनमें अंग्रेजी को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अपनाया जाता है। इससे यह पता चलता है कि अपनी भाषाओं का कितना महत्व है। अपनी मातृभाषा की कीमत पर आगे बढ़ना श्रेस्यकर नहीं है। प्रो. पालीवाल ने कहा कि ऐसे वैज्ञानिक संगठनों में किए जा रहे अनुसंधान का लक्ष्य, भारत की 80 प्रतिशत ग्रामीण जनता तक पहुंचना है। यह हिन्दी के माध्यम से ही हो सकता है क्योंकि जनसंख्या का यह हिस्सा हिन्दी अथवा प्रादेशिक भाषाएं जानता है। संस्कृति पर हो रहे इस आक्रमण के दौर में सभ्यताओं का संघर्ष संस्कृतियों का संघर्ष भी है। अपनी भाषा को बचाकर ही संस्कृति और सभ्यता को बचाए रखा जा सकता है। अपनी भाषा और पूर्वजों का ज्ञान ही हमें वास्तविक शक्ति देता है।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. एम.पी. सक्सेना ने हिन्दी के लिए किए जा रहे प्रयत्नों में कमी की ओर इंगित करते हुए आह्वान किया कि हमें हिन्दी की सेवा का व्रत लेना चाहिए तथा इसी प्रकार वैज्ञानिक शोधपत्रों व उपलब्धियों को राजभाषा हिन्दी में प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजभाषा अनुभाग की ये गतिविधियां निश्चित रूप से विज्ञान के लोकप्रियकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

समारोह का संचालन करते हुए डॉ. दिनेश चमोला, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं संयोजक ने हिन्दी को उदारता की भाषा बताते हुए कहा कि ज्ञान चाहे हम अन्य भाषाओं से भी लें, लेकिन अभिव्यक्ति हम अपनी ही भाषाओं में करें। हिन्दी विज्ञान की अभिव्यक्ति में भी पूर्णतः समर्थ है। भारत में बाजार हिन्दी से चल सकता है। हिन्दी अपनत्व, संस्कार व उदारता की भाषा है। हमारे ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों पर हमारा देशवासी तभी गर्व की अनुभूति कर सकता है जब वह हिन्दी व भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्त हो। हिन्दी में वीणावाणी के भावस्थान में आए हर शब्द यात्री का न केवल आतिथ्य किया है बल्कि उन्हें उदारता से आत्मसात भी किया है।

मुख्य अतिथि ने हिन्दी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा -- निबंध, कविता-पाठ, हस्ताक्षर, टिप्पण, आशु-भाषण, अनुवाद तथा मूल रूप से सरकारी कामकाज हिन्दी में करने वाले विजेता कार्मिकों को पुरस्कार भी वितरित किये।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए वी.के. गुप्ता द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।
संपादकः दीक्षा बिष्ट; अनुवादः मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आऊटः मलखान सिंह; कम्पोजिंगः कृष्णा
फोनः 25841846, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/267 ग्रामः PUBLIFORM, New Delhi; फैक्सः 25847062
ई-मेलः csirsamachar@niscair.res.in वेबसाइटः http://www.niscair.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें